25 मैं, रोहन बोपन्ना

(जैसा कि उन्होंने प्रीति मथानी को बताया)

रोहन बोपन्ना

गर्व और आत्मविश्वास की अनुभूति होना, डेविस कप में भारत का प्रतिनिधित्व कर सकने की योग्यता अर्जित करना, अपने माता–पिता की आवाज में गर्व की खनक सुनना, आत्मिक सन्तोष का अहसास होना, उस खेल और लोगों को वह सब लौटा पाना जो मैंने उनसे पाया है – ये सब मेरे, रोहन बोपन्ना, एक पेशेवर टेनिस खिलाड़ी के लिए अमूल्य हैं।

मैं ग्यारह बरस का था जब खेलों के शौकीन मेरे पिता ने मुझे टेनिस खेलने के लिए प्रेरित किया। स्कूल में बहुतेरे मैदानी खेल खेलने के बाद, खेल के मैदान में जिन्दगी गुजारने के लिहाज से टेनिस मुझे एक आकर्षक विकल्प लगा। इस खेल के लिए एक सहज प्रतिभा होने के साथ–साथ मेरे अन्दर एक दृढ़ता भी थी जो मेरे खेल के लिए एक बड़ा सम्बल थी। सो इस खेल में एक व्यवस्थित ढंग से प्रशिक्षित होने के हिसाब से मैं पहले बंगलौर गया और फिर पुणे। खेल सीखने के साथ–साथ मेरी पढ़ाई भी जारी रही। लेकिन पढ़ाई सम्बन्धी मेरे सारे फैसले इस आधार पर होते चले गए कि सम्बद्ध शैक्षिक संस्था मुझे मेरे शौक (टेनिस) के अभ्यास के लिए जरूरी समय देने के हिसाब से कितनी लचीली है।

एक पेशेवर टेनिस खिलाड़ी बनना, और उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण, पेशेवर खिलाड़ी बनने का मेरा सफर, एक ऐसा शैक्षिक अनुभव रहा जिसने मुझे वह बनाया जो मैं आज हूँ। व्यावहारिक तौर पर दुनिया के रंग–ढंग में अपने आपको शिक्षित करने के लिए मैंने सोच–समझकर ही खेल का माध्यम चुना। टेनिस और इसके साथ चलने वाले प्रशिक्षण ने मुझे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अहसास और एक आत्मविश्वास दिया। इसने मुझे मानक तय करने का शऊर दिया, मुझे लक्ष्य–केन्द्रित और एकाग्रचित्त होना सिखाया।

कुछ लोग उन सब प्रहारों का सामना करना सीख लेते हैं जो उन्हें अपने स्कूली और कॉलेज जीवन में मिलते हैं, और इसके बाद वे अपनी आजीविका के लिए किसी दफ्तर में नौकरी करने लगते हैं। मैंने इसके बजाय अपनी आजीविका के लिए एक पेशेवर मैदानी खेल चुनने और उसके जरिए एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाने पर सोच–विचार किया।

मेरे ख्याल से शिक्षा का अर्थ है अनुभवी लोगों से सीखना, और उस सीख के आधार पर टेनिस कोर्ट में और टेनिस कोर्ट के बाहर अपने व्यक्तित्व को माँजना। मेरे लिए हर टेनिस मैच किसी भी अभ्यास मैच के मुकाबले ज्यादा चुनौतीपूर्ण रहा है। मेरा ध्येय यही रहता है कि मेरी सर्विस में बॉल को नेट के पार ले जाने की ताकत हो, मैं लगातार ऐसा करता रहूँ, और खेलते हुए अपनी क्षमताओं और अपने खेल के सकारात्मक पक्षों का लाभ उठाऊँ।

खेल को जब सक्रिय प्रोत्साहन मिलता है और एक व्यक्ति जब खेल के प्रति सच्ची–खरी दिलचस्पी रखता है, तब खेल शिक्षा बन जाता है। शुरुआत में मैं एक अन्तर्मुखी बच्चा था, लेकिन खेल के चलते मैं अपने खोल से बाहर आया और अपने परिवेश के प्रति सजग हुआ। अब मैं परिस्थितियों और लोगों के हिसाब से अपने आपको ढाल लेता हूँ, और अपने परिवेश को महत्व देना सीख गया हूँ। टेनिस ने मुझे एक वैश्विक नागरिक बनने का मौका दिया। खेलने की प्रक्रिया में मैं दुनिया भर घूमता रहा हूँ। अपने इसी खेल की बदौलत मुझे अलग–अलग किस्म के लोगों से मिलने का मौका मिला है। व्यक्तिगत रूप से वहाँ होना, तमाम तरह की

विविधताओं के अहसास से गुजरना, अपने–अपने तजुर्बों को आपस में साझा करना अपने आप में एक अद्‌भुत और सन्तुष्टि भरा अनुभव रहा है। मुझे अच्छी तरह याद है कि 2006 में रॉजर फेडरर के विरुद्ध मेरे मैच की शुरुआत मेरी घबराहट से हुई थी लेकिन जैसे–जैसे मैं मैच में रमता गया, वह मैच रोमांचक और चुनौतीपूर्ण होता गया।

खेल अगर शैक्षिक पाठ्यचर्या का हिस्सा बन जाए तो यह एक व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया का एक बढ़िया सन्तुलनकारी घटक बन सकता है, जिसकी मदद से वह अपनी क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है।

स्पोर्ट्स करिअर या अकादमिक करिअर, इनमें से कोई एक चुनने का फैसला सम्बद्ध व्यक्ति द्वारा सोच–समझकर किया जाना चाहिए। दोनों की माँग है कि हम अपने लिए मानक और लक्ष्य तय करें। लेकिन मैंने तय किया कि मैं हर रोज एक स्वस्थ अस्तित्व के साथ जागूँगा, जिसमें मेरे लिए दिन की रौशनी और बाहर की खुली हवा सुनिष्चित होंगे।

आन्तरिक बल और खेल पर केन्द्रित एकाग्रता से संचालित एक स्वास्थ्यकर व्यवस्था ने मेरे व्यक्तिगत विकास में बहुत अहम भूमिका निभाई है। अपने जोड़ीदार के साथ मानसिक तालमेल और संगति की माँग करने वाली डबल्स टेनिस, समझदारी और परस्पर जुड़ाव का माहौल बनाती है। टीम में शामिल दोनों खिलाड़ियों के लिए निहायत जरूरी होता है कि वे सामंजस्य बनाकर खेलें, और इस आपसी तालमेल और सामंजस्य के बल पर ही बढ़िया टीमें बनती हैं।

टेनिस मेरा जुनून है, मेरी आस्था है, और यह खेल खेलते–खेलते मैं अपने जीवन का हर दिन बिताता हूँ, मेरी हर उपलब्धि का आनन्द लेता हूँ, और आगे के लक्ष्य तय करते हुए नए दिन की शुरुआत करता हूँ।

__रोहन बोपन्ना__ ने सन् 2003 में जोरदार सर्विस वाले 23 वर्षीय एक ऐसे खिलाड़ी के तौर पर पेशेवर टेनिस की दुनिया में कदम रखा, जिसे देखकर लगा कि वह भारतीय टेनिस की सूरत ही बदल कर रख देगा। सात साल तक तमाम प्रसिद्ध राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामैन्ट्स में खेलने के बाद खासतौर पर अन्तर्राष्ट्रीय युगल सर्किट और डेविस कप में एकल मैचों के एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उनकी धाक बनी है।

साल 2010 में रोहन ने एक बार फिर टेनिस जगत में अपना सिक्का जमाया जब वे यू.एस. ओपन का फाइनल खेले और विम्बलडन में क्वार्टर–फाइनल तक पहुँचे। रोहन भारतीय डेविस कप टीम के एक सदस्य हैं और 2010 के डेविस कप मुकाबले में ब्राजील के विरुद्ध भारतीय टीम की यादगार जीत में उनकी बड़ी अहम भूमिका रही।